पुनरावृत्ति कार्य-पत्र–13

पृष्ठ संख्या–263

उत्तर–

1. (क) **बाल मज़दूरी : एक अभिशाप**

14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से काम कराया जाना बाल मज़दूरी कहलाता है। यह देखा गया है कि विकासशील देशों में गरीब माँ-बाप मजबूरी में अपने बच्चों को उनकी इच्छा के विरुद्ध काम पर लगा देते हैं। अत: इन बच्चों से बहुत ही कम पैसों में काम करवाया जाता है। ये बच्चे भी शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, अपने दोस्तों के साथ खेलना चाहते हैं और दूसरे अमीर बच्चों की तरह अपने माता-पिता का प्यार और परवरिश पाना चाहते हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश इन्हें अपनी हर इच्छा का गला घोंटना पड़ता है। कहने का तात्पर्य यही है कि सभी विकासशील देशों में बाल मज़दूरी का प्रमुख कारण गरीबी है। समाज से इस बुराई को जड़ से मिटाने के लिए समाज और सरकार दोनों को कड़े कदम उठाने होंगे। गरीब परिवारों के लिए ऐसी योजनाएँ आरंभ करनी होंगी, जिनसे उनकी आर्थिक स्थिति बेहतर हो सके ताकि वे मजबूरी में अपने छोटे-छोटे मासूम बच्चों को मज़दूर बनाने के लिए मजबूर न हों। हमें यह ध्यान रखना होगा कि बाल मज़दूरी एक सामाजिक अभिशाप है तथा समाज में बढ़ते अपराधों का एक बड़ा कारण भी है।

(ख) **ई-कचरा**

ई-कचरा उन उपकरणों को कहा जाता है, जिनके खराब होने पर उनके स्थान पर नए उपकरण लगाकर उन्हें फेंक दिया जाता है। ये निष्प्रयोजन खराब उपकरण ही ई-कचरा कहलाते हैं; जैसे– बेकार कंप्यूटर, मोबाइल, प्रिंटर्स, फ़ोटोकॉपी तथा कैमरा आदि का कचरा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, नई दिल्ली के अनुसार प्रतिवर्ष ई-कचरे की मात्रा बढ़ती जा रही है। बदलती जीवन-शैली और शहरीकरण की वजह से ई-कचरा और तेज़ी से बढ़ रहा है। इसके खतरे से अभी हम बेखबर हैं। वस्तुत: ई-कचरे से निकलनेवाले रासायनिक तत्व किडनी,

लीवर को प्रभावित करने के साथ-साथ कैंसर और लकवा जैसी जानलेवा बीमारियों की भी वजह बन रहे हैं। इन बीमारियों का खतरा उन विशेष क्षेत्रों में ज़्यादा होता है जहाँ अवैज्ञानिक तरीके से ई-कचरे का पुनःचक्रण किया जाता है। इससे निकलनेवाले ज़हरीले तत्व एवं गैसें मिट्टी और पानी में मिलकर उन्हें क्रमश बंजर और ज़हरीला बना देते हैं। भारत में यह समस्या 1990 के दशक से उभरने लगी थी, किंतु इस समस्या से बचने के लिए सरकारों ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया। वस्तुतः इनकी पुनःचक्रण की प्रक्रिया भी बहुत जटिल है। साथ-साथ बहुत कारगर भी नहीं है। इससे बचने का सबसे कारगर उपाय है– इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का कम-से-कम उपयोग करना।

(ग) **शिक्षा का व्यवसायीकरण**

'शिक्षा का व्यवसायीकरण' के दो स्वरूप हैं– पहला, पाठ्यक्रम का व्यवसाय केंद्रित होना और दूसरा, शिक्षा संस्थानों का संचालन किसी व्यवसायी के द्वारा होना। पाठ्यक्रम का व्यवसायपरक होना बहुत हद तक जायज़ है, किंतु मात्र रुपये कमाने की अंधी दौड़ में छात्रों को झोंक देना भी पूर्णतया राष्ट्रहित के लिए खतरा है। ऐसे में प्रेम, सौहार्द और देशप्रेम जैसी बातें गौण हो जाएँगी। जहाँ तक शिक्षा संस्थानों के व्यवसायीकरण की बात है, यह हमारी वर्तमान शिक्षा-प्रणाली के अवमूल्यन का सबसे बड़ा कारण है। भारतीय परंपरानुसार शिक्षा उपहारस्वरूप दी जाती थी, किंतु आज व्यवसाय की वस्तु बन गई है। ज्ञानदान की पुण्य परंपरा थी, जो आज पैसा एकत्र करने की योजना बनकर रह गई है। इसका दुष्प्रभाव प्रतिभावान छात्रों पर पड़ रहा है। शिक्षा की गुणवत्ता जिन निजी शिक्षण संस्थानों में है, उनकी फ़ीस इतनी अधिक है कि प्रतिभावान होते हुए भी सामान्य परिवार के बच्चे उसमें अपना दाखिला नहीं करा सकते। यही आज की शिक्षा पद्धति का सबसे बड़ा दुष्परिणाम है। प्रतिभावान छात्रों का हक मारा जा रहा है। उनके स्थान पर आर्थिक रूप से संपन्न बच्चे काबिज होते जा रहे हैं। इसकी रोकथाम के लिए सरकार को गंभीरता से सोचने की ज़रूरत है। सार्वजनिक शिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता सुधारने और नए-नए संस्थानों को स्थापित करने पर सरकारों को ध्यान केंद्रित करना होगा। साथ-साथ निजी स्वामित्व वाले शिक्षण संस्थानों पर अंकुश लगाने की

सख्त ज़रूरत है।

2. (क) **इंटरनेट**

आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है। विज्ञान ने मानव को असीम शक्तियाँ देकर उसके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया है। विज्ञान की उपलब्धियों में कंप्यूटर व इंटरनेट का विशेष स्थान है। समस्त विश्व में तकनीकी क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई है जिसका परिणाम इंटरनेट भी है। प्रत्येक विषय से जुड़ी जानकारी हमें इंटरनेट द्वारा आसानी से प्राप्त हो जाती है। चाहे वह पढ़ाई से संबंधित हो या मनोरंजन से जुड़ा विषय, सबकी जानकारी तुरंत प्राप्त हो जाती है। आज इंटरनेट ने व्यक्ति को पंक्तियों में कई-कई घंटों खड़े होकर बिजली के बिल जमा करने में, रेलवे बुकिंग में, हवाई यात्रा बुकिंग में होने वाली समय की बरबादी से बचाया है। इंटरनेट द्वारा पत्र व संदेश भी भेजे जा सकते हैं। ई-मेल द्वारा हम घर बैठे ही अपने मित्रों, सगे-संबंधियों व विभिन्न संस्थानों से पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। आज बोर्ड की कक्षाओं के विद्यार्थी विद्यालय में परीक्षा परिणाम पहुँचने से पहले ही इंटरनेट पर उसे जान लेते हैं। किंतु आज इंटरनेट अपने साथ हमारे जीवन में समस्याएँ भी लेकर आया है। इंटरनेट द्वारा नए प्रकार के अपराधों का जन्म हुआ है। साइबर क्राइम या इसके माध्यम से चोरी करने वालों को हैकर्स कहा जाता है। इन अपराधियों को पकड़ने के लिए सरकार कानून बना रही है। इस प्रकार यह मानव पर निर्भर करता है कि वह विज्ञान के इस महत्वपूर्ण देन का सदुपयोग कर उसको वरदान सिद्ध करता है या दुरुपयोग कर अभिशाप।

(ख) **शिक्षक दिवस**

महान शिक्षाविद् और भारत के दूसरे राष्ट्रपति श्री सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का जन्म 5 सितंबर को हुआ था। शिक्षा के क्षेत्र में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। इन्होंने कहा था–"एक शिक्षक का दिमाग किसी भी राष्ट्र का बेहतरीन दिमाग होता है।" इस प्रकार इनके द्वारा समय-समय पर छात्रों को मार्गदर्शन देने एवं शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित करने की वजह से इनके जन्म दिवस 5 सितंबर, 1962 को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। आज के दिन शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों के कर्तव्य का निर्वहन एवं उसकी व्यवस्था शिक्षार्थियों

द्वारा की जाती है। बहुत इंतज़ार के बाद इस वर्ष मुझे शिक्षक दिवस पर अपने विद्यालय में हिंदी शिक्षक की भूमिका निभाने का अवसर प्राप्त हुआ। शिक्षक के रूप में जब मैं पूर्व निर्धारित कक्षा में पहुँचा तो बच्चों ने पूरी कक्षा को सिर पर उठा रखा था। उस दिन एहसास हुआ कि विद्यार्थियों को सही मार्गदर्शन देने के लिए शिक्षक को कितने संयम एवं धैर्य से काम लेना पड़ता है। इस घटना ने शिक्षक के प्रति मेरे नज़रिए को पूरी तरह से बदल दिया। उस दिन शिक्षक के प्रति श्रद्धा के साथ-साथ विद्यार्थी का कर्तव्यबोध भी हुआ। निस्संदेह शिक्षक एक विशाल हृदय का स्वामी होता है, जो सिर्फ़ शिक्षा ही नहीं देता बल्कि दुनिया की समझदारी और सही-गलत का अंतर भी बताता है।

(ग) **सच्चा मित्र**

सच्ची मित्रता अनमोल धन है। इसकी तुलना किसी भी संबंध से नहीं की जा सकती। वस्तुतः सच्चा मित्र वही होता है, जो दुख के समय चट्टान की तरह आपके साथ खड़ा रहे। इस वर्तमान परिवेश में इस प्रकार के मित्र का मिलना असंभव तो नहीं, किंतु कठिन कार्य अवश्य है। रामचंद्र शुक्ल के कथनानुसार–"सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है। मातृत्व से ओत-प्रोत माँ का-सा धैर्य और कोमलता होती है।" एक सच्चा मित्र हमें सकारात्मक कर्म करने के लिए प्रेरित करता है और उसमें सहायक बनकर साथ खड़ा रहता है। साथ-साथ वह हमें कुमार्ग पर चलने से रोकता है। अतः सच्चा मित्र औषधि के समान होता है। वह हमारी समस्त विकृतियों को दूर करने में अहम भूमिका अदा करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सच्ची मित्रता मनुष्य के लिए वरदान है।

पुनरावृत्ति कार्य-पत्र–14

पृष्ठ संख्या–265

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।